हाय! उदासियाँ !!!

मु0 र0 आबिद

18/19 फरवरी, 2005 की रात,

काँपता सूर्य अस्त हो चुका था............. सिसकता चाँद अपनी रात की यात्रा बीचसे ही काट कर डूब चुका था...............बस झिलमिलाते तारे.............आंसुओं के समान................प्रकाश के साक्षी बने............सम्भवतः इतिहास–रचना मी लीन थे.............अचानक कानों में एक आवाज़ टकरायी ....बिजली की तरह............क्या? क्या!! चौधरी साहब चल बसे.................और :

फिर उसके बाद उजाला रहा न दीपों में!! ज्ञानेन्द्रियाँ सुन्न हो गयीं, मन बुझ गया, चारो ओर उदासियाँ छा गयीं। संचार माध्यम का चकित चेहरा फटा का फटा रह गया। समय के इतिहास में शोक–गीत रच रहा था।

एक अद्भुत व्यक्ति से संसार ख़ाली हो गया.....

वह यथार्थवादक व्यक्ति..............जो असत्य के हाथों न बिका,

वह अकेला इकलौता व्यक्तत्व...........जो एकताई की संज्ञा, स्वाभिमान का रूपक था,

वह भारी भरकम व्यक्तत्व............जिसका ज्ञान–गुरुत्व बुद्धजीवी जगत में मूल्य रखता,

वह बहुमुखी बहुआयामी जीव.........जिसमें सामाजिक वक्ता (लिपिक) प्राणी की प्रतिमा पूरी चमक दमक के साथ सुशोभित दिखी,

वह आदर्श सामाजिक Species जिसकी सामाजिकता किसी भी भेद–तनाव की परवाह न कर सामूहिकता के सौन्दर्य की साज–सज्जा करती रही और जिसके आचरण सौहार्द और सहायिकताके आशय उबारा किये,

वह दो टूक बोल का सटीक कलाकार जिसकी अचूक बेलाग समीक्षा किसी समीप–दूर, परिजन–पजन, अपने पराये का भेदभाव न करती और वहीं जिसकी सूक्ष्मदर्शी व्यापक प्रशंसा भी सभी सांस्कृतिक सामाजिक सीमाबद्धता Decorum को पार कर लिया करती,

जाग्रुक्ता का वह बड़ा बूढ़ा पुरोहित जिसके दिमाग़ को प्रभावित कर देने की क्षमता सामर्थ किसी घटना–दुर्घटना में न थी,

मान सम्मान और बांकपन का वह ऊँचे क़द का जियाला जिसका सर झुकना नहीं जानता था,

जिसकी लेखनी बिकना नहीं जानती थी,

जिसके पाँव डिगना नहीं जानते थे,

आज वह प्रकृति के एक पुराने जाने पहचाने अन्तिम निर्णय के सामने नतस्तक हो गया.........वह निर्णय जो कभी बदला नहीं करता।

वह खद्दरधारी धर्माचार्य जिसकी सर्वज्ञता जानी पहचानी और ज्ञान–जगत में माने रखती थी, जिसका कहा हुआ प्रामाणिकता का पर्याय होता और जिसको राजनीति के दिग्गज नमन

करना अपना गर्व समझते, जिसकी ठोकर राज–मुकुट से खेलती, वह आज मनो मिट्टी के नीचे चला गया, साकार नमन हो गया। ज्ञान–स्तम्भ धराशायी हो गया।

वह साहित्यकार, ज्ञानी, समीक्षक, समालोचक, नेता, धर्मगुरु, शोध का सूत्रधार, अपनी शैली का रचयिता, पत्रकार, लेखनी की मर्यादा, समुदाय की शोभा, जन सहयागी, राष्ट्रप्रेमी, स्वतन्त्रता सेनानी और तौहीद अर्थात ऐकेश्वरवाद का संचारक अतीत में समा गया। अकबरपुर ने बड़ा ही अंधकार बिखेर दिया, देश अचेत है, संसार उदास है। अक्षर का जगत अनाथ हो गया। हम उसके शोक में डूबे हैं। हम उसकी पहचान न कर सके, उसका मूल्य न समझ पाये। शायद जगपुरुषों का यही भाग्य होता है। हाँ जाते–जाते वह अपने पिछड़े राष्ट्र और समुदाय की परीक्षा लेता गया। जनाधिकार के इस खुले हुए ध्वजवाहक, सामाजिक हीरो, समाजवाद के अग्रणीय नेता के दायित्व से हम कहाँ तक उन्मुक्त हो पाते हैं, समय ही बतायेगा। अभी तक तो घोर अन्धकार, निराशा और शून्य है। उदासीनता के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखायी देता।

फिर भी लेखनी अपने किसी प्रेमी को यूँ ही नहीं जाने देती, आज नहीं तो कल उसकी जय–जयकार करेगी :

क़लम आज उनकी ''जय'' बोल
अन्धा चका चौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा।
साक्षी उनकी महिमा के है,
सूर्य, चन्द्र, भुगोल, खगोल।
क़लम आज उनकी ''जय'' बोल।।

(बक़िया एक सबक़ इस्लाम से..........)

रुके हुए और खामोश और ठहरे हुए सितारे का होना माना जाए और कहा जाय कि इसमें किसी अचानक हादसे की वजह से हरकत हुई और दूसरे सितारे बनना शुरु हो गए लेकिन इसका जवाब क्या है कि खामोश और पुरसुकून माद्दे में अचानक हरकत आई कैसे? और वह ध्‍ामाका क्यों हुआ जिसने एक जगह ठहरी हुई कायनात को हरकत में बदल दिया इस जगह पर अक़्ल परेशान हुई तो मज़हब का सहारा लेना पड़ा और मानना पड़ा कि हर माद्दे के पीछे भी कोई ताक़त है जिसने उसे हरकत दी और पैदाईश का चक्कर चलाया, ज़मीन पर लुढ़कते हुए पहिये को देखकर हम अन्दाज़ा लगा लेते हैं कि कोई हाथ था जिसने इसे हरकत दी थी चाहे वह हाथ हमें नज़र भी न आ रहा हो। इन्सान के बनाये हुए दर्जनों हवाई जहाज़ खुले आसमान में चक्कर लगा रहे हैं जिनमें कोई ड्राईवर नही है, तो क्या कह सकते हैं कि यह हमेशा से इसी तरह अपने आप हरकत में लगे हुए हैं! नहीं बल्कि मानते हैं कि एक हरकत देने वाली ताक़त ने उन्हें आसमान में पहुँचा कर एक चुनी हुई जगह पर चला दिया इस तरह अन्दाज़ा लगया जा सकता है कि एक ऐसी भरपूर ताक़त वाला हाथ है जिसने इस कायनात को तमाम सितारों के साथ हरकत में दिया है और पैदाइश के रास्ते पर डाला है इसी लिए तो क़ुर्आन ने कहा कि ''इन्न– इ–ल रब्बिक– मुन्तह–'' किसी भी रास्ते से जाओं तुम्हारी इन्तिहा रब ही पर होगी।